P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बुन्देलखंड क्षेत्र में औषधि पौधों का महत्व

Importance of Medicinal Plants In Bundelkhand Region

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 28/12/2020, Date of Publication: 29/12/2020

मतुआ अहिरवार
सहायक प्राध्यापक
वनस्पति विभाग,
शा. स्ना. महाविद्यालय रामपुरा
जिला नीमच, भारत

सारांश

जीवन में बीमारी के समय रोग और रोगी का बहुत गहरा संबंध होता है।

वर्तमान में बढती जनसंख्या बदलते परिवेश के कारण पर्यावरण में कई प्रकार के जीवाणुओं, विषाणुओं का प्रकोप बना रहता है जिससे मानव पूर्ण रूप से स्वास्थ्य के प्रति चिंतित और परेशान है जिसके कारण उसे चिकित्सा की आवश्यकता पडती है । अंग्रेजी चिकित्सा आम लोगों के लिये महंगी पडती है तथा उसके कई विपरीत प्रभाव रोगी को भुगतने पडते हैं ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा रोगी का इलाज सस्ता एवं उपयोगी हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में जडी बूटियॉ और जैव विविधता का भंडार है जो ग्रामीण इलाकों में पुराने समय के वैद्य और औषधि जानकार आज मौजूद है, जो मानव एवं जानवरों का इलाज औषधि पौधों द्वारा करते आ रहे हैं ।

बुंदेलखंड क्षेत्र के छतरपुर जिला के अंतर्गत बडा मलहरा, बिजावर, बकस्वाहा ऐसे क्षेत्र हैं, जहॉ पर घने जंगल, नदी नाले और पहाडों की अधिकता है जिसमें अनेक प्रकार के औषधि पौधे पाए जाते हैं।

At the time of illness in life, the disease and the patient have a very deep relationship.

Presently due to the increasing population changing environment, there is an outbreak of many types of bacteria and viruses in the environment, due to which the human being is concerned and worried about the overall health, due to which he needs medical attention. English medicine is expensive for the common people and many adverse effects have to be suffered by the patient.

The treatment of the patient by Ayurvedic medicine has become cheap and useful. Bundelkhand region has a store of herbs and biodiversity, which is present in the rural areas of old-time medicine and medicine experts, who have been treating humans and animals with medicinal plants.

There are large Malhara, Bijawar, Bakaswaha areas under Chhatarpur district of Bundelkhand region, where there is an abundance of dense forest, river drain and hills in which many types of medicinal plants are found.

मुख्य शब्द : वैद्य, औषधि जानकार, परंपरागत, बुंदेलखंड, छतरपुर, बिजावर बडा मलहरा, बकस्वाहा, चिकित्सा।

Vaidya, Medicine Informant, Traditional, Bundelkhand, Chhatarpur, Bijawar Bada Malhra, Bakswaha, Medicine.

प्रस्तावना

औषधीय पौधों का अध्ययन आर्थिक वनस्पतिशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं रोचक विषय है । औषधि पौधों का उगाना, अध्ययन ओर विभिन्न बीमारियों में उनका उपयोग इत्यादि फार्मोकोगोनी के अंतर्गत है । वेदों के अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीनकाल से ही मनुष्य विभिन्न प्रकार के पौधों का उपयोग रोग के निदान हैतु करता आ रहा है ।

मनुष्य का यह ज्ञान सभ्यता के विकास एवं उसके संबंध प्रयासों से बढता ही रहा है । आज–कल आयुर्वेदिक एवं यूनानी पद्धतियों में पादप औषधियों से ही रोगों का इलाज होता है ।

प्राचीन समय से आदिम जातियॉ जंगलों में रहा करती थी और आज भी रहती है । आदि मानव काल में मनुष्य जंगलों में आवास, भोजन, चिकित्सा, मनोरंजन का साधन था ।

साहित्यावलोकन

ग्रंथ विश्व खाद्य फसलों के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करता है यह फसल एव ऑषधी य इतिहास प्रारंभिक और नवीनतम विकास के संदर्भ में ज्ञान की स्थिति को न्यायिक दृष्टिकोण के आधार पर क्रियोटक्सोनिक और भौगोलिक साक्ष्यों के आधार पर सही ठहराते हैं दक्षिण अफ्रीकी जनरल ऑफ बॉटनी 114 250 259 वर्ष 2018 औषधीय पौधों का उपयोग हाल के वर्षों में बड़ा है अनुशासन के रूप में प्राप्त उत्पत्ति दवाओं के अध्ययन और स्वास्थ्य सेवा में इसके अनुप्रयोगों में उल्लेखनीय बदलाव आया है औषधि दवाओं के चिकित्सीय उपयोग से संबंधित विषयों के साथ–साथ पहलुओं को शामिल करता है हमने 1933 से और वर्ष 2018 के बीच प्रकाशित बर्बेरिस के उपयोग के संबंध में साहित्य की समीक्षा की है हमने पाचन संबंधी जीवाणु रोधी हाइपोटेंशन प्रभाव हृदय रोग के गुणों का अध्ययन करते हुए 500 से अधिक लेख पाए हैआघात मानसिक रोग , अल्जाइमर रोग, ओस्टियोपोरोसिस और औषधि परिणामों के बारे में अध्ययन शामिल हैं संदर्भ ग्रंथ सूची दक्षिण अफ्रीकी जनरल ऑफ बॉटनी वर्ष 2018 डी एस पाटिल वैज्ञानिक प्रकाशन 2019

प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि प्राकृतिक वनस्पतियों का औषधि के रूप में उपयोग सर्वप्रथम चीन में किया गया । भारत के सबसे प्राचीन, धार्मिक ग्रंथ ऋग्वेद में भी ऐसे संदर्भ मिलते हैं जो वनस्पतियों का उपयोग औषधि के रूप में दर्शाते हैं ।

अथर्ववेद जिसकी रचना ऋग्वेद के बाद हुई । अथर्ववेद में अनेक पौधों का विस्तृत वर्णन किया गया । चरक संहिता तथा सुश्रुत संहिता, जिन्हें चिकित्सा पद्धति का आधार माना जाता है । चीन में करीब 4000 B.C. के पूर्व प्रमाण में औषधि पौधों का वर्णन मिलता है ।

यूनान के महान दार्शनिक '' थ्रियो फ्रास्ट्स '' जिन्हें प्राचीन वनस्पति विज्ञान का पिता कहा जाता है, जिन्होंने अपनी पुस्तक हिस्टोरिया प्लान्टेरम में अनेक पौधों का वर्णन किया गया था । औषधि के क्षेत्र में चरक तथा सुश्रुत हो महान विभूतियों का नाम आज भी भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा है ।

प्राचीन काल से वर्तमान तक लगातार औषधि पौधों का अध्ययन किया जा रहा है । भारत के पूर्वी हिमालय से लेकर नीलगिरी की पहाडियों में पाये जाने वाले औषधि पौधों का अध्ययन किया गया है ।

आधुनिक युग में औषधि पौधों को कृत्रिम रूप से उगाया जाता है । इन औषधि पौधों को लगाने के लिये विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों एवं अनेकों अनेक शोध संस्थान स्थापित किये गए हैं जो भारत सरकार द्वारा भारत के दार्जिलिंग, उ. प्र. के रानी खेत में औषधि पौधों का हरवेरियम बनाकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया गया है ।

थॉमस जेफीरसन (Thomas Jefferson 1914) के अनुसार ''वनस्पति विज्ञान सबसे अधिक उपयोगी विज्ञान है '' जिससे मनुष्य एवं जंतु मुख्य रूप से भोज्य पदार्थ प्राप्त कर जीवित रहते हैं तथा हमारे शरीर के लिये दवाइयॉ प्राप्त होती है ।

आर्थिक दृष्टि से मनुष्य प्रारंभ से ही जीवित रहने के लिये पौधों पर निर्भर है । आधुनिक युग में पौधों से खर, साबुन और औषधियॉ, मसाले, गोंद, रेशे से पदार्थ प्राप्त किये गए जो मनुष्य के लिये अधिक उपयोगी है ।

औषधि विज्ञान– विज्ञान की वह शाखा है जिसमें औषधि पौधों के समस्त भाग– जड, तना, पत्ती, छाल आदि का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है, औषधि विज्ञान कहलाता है ।

वे व्यक्ति जो औषधि पौधों तथा आयुर्वेदिक औषधियों का अध्ययन करते हैं उन्हें आयुर्वेदाचार्य कहते हैं।

चिकित्सा पद्धति सबसे पुरानी पद्धति है जो वासत्विक शुद्ध है । विभिन्न प्रकार के पौधों से औषधियों को बनाने में कभी–कभी धातुओं जैसे– सोना, चांदी, लोहा, पारा, सीसा तथा जहरीले पदार्थों को उपयोग किया जाता है । औषधि पौधों की कीमत उनमें कुछ रासायनिक पदार्थों की उपस्थिति के कारण होती है । इन पदार्थों में एल्कालोइड (Alkoloid) ग्लूकोसाइड (Glucosides) रेजिन्स (Resins) श्लेष्म (Mucilage) टेनिन्स (Tanins) गम (Gum) आदि होते हैं । इन सभी का उपयोग औषधियों में होता है ।

अधिकांश आयुर्वेद औषधियॉ शाकीय पौधों तथा औषधि पादपों की छाल, पत्ती, फूल, जड, तना आदि जडी बूटियों को कूट–कूट कर, पीसकर , गोलियां, सत्व सिरप बनाकर उपयोग में लाते हैं । जब इस तरह की चिकित्सा पद्धति को यूनानी, ग्रीस चिकित्सक अपनाते हैं तब उन्हें यूनानी चिकित्सक कहते हैं।

प्रकृति में पाया जाने वाला हर एक पौधा औषधि होता है लेकिन पौधे के बारे में जानकारी होना अति आवश्यक है । प्रत्येक औषधि पौधे में एल्कोलाइड (Alkoloid) अवश्य होता है जो प्राणियों के शरीर में अपना प्रभाव दिखाता है और प्रतिजैविक (Antigen) हानिकारक असर दिखाता है , उदाहरण स्वरूप धतूरा में स्कॉपेलेमाइन (Scopalamine), नीम में एजेडरिन, तुलसी में सिनिओल (Cineole) यूजिनॉल (Eugenol) आदि पाए जाते हैं । सर्दी खांसी जुकाम में उपयोगी होता है । प्याज एवं लहसून में गंदक पाया जाता है जो रक्त को पतला एवं कैंसर से सुरक्षा प्रदान करता है । इसी प्रकार से अफीम, मार्फिन, कोडीन, नाकोटीन पाया जाता है जो पेचिस और दर्द व नींद में आराम देता है ।

इसके उपरांत अदरक (Zingiber Officinalis) तीखे स्वाद के कारण ऑलियोरेजिन पाया जाता है जो पाचन संबंधी गडबडियों को ठीक करता है।

काली मिर्च, लौंग, पीपर छोटी बडी और शहद को मिलाकर खाने से अस्थमा एवं बच्चों की सर्दी खांसी में बहुत लाभकारी होता है ।

भारत में बुंदेलखंड का महत्वपूर्ण क्षेत्र कहलाता है जो उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश के चुनिन्दा जिलों को मिलाकर बना है । बुंदेलखंड महाराजा छत्रसाल की नगरी

के नाम से जाना जाता है जहॉ पर क्षेत्रीय बुंदेली भाषा बोली जाती है । बुंदेलखंड में विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर जिन्हें चंदेल राजाओं द्वारा बनवाया गया था जो आज विश्व धरोहर में सम्मिलित है ।

बुंदेलखंड तरह–तरह के मंदिरों, इमारतों, स्मारको, मूर्तियों तथा नदी, वन, पर्वत, झीलों से भरा पडा है । बुंदेलखंड के छतरपुर जिले के बकस्वाहा तहसील में भीमकुंड , अर्जुनकुंड प्राकृतिक दृश्य है जिसे देखकर मन प्रफुल्लित होता है । भारत का बुंदेलखंड जैव विविधता से भरा पडा है । इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं छटा विश्वस्तर पर है ।

जैव विविधता के संबंध में बुंदेलखंड अग्रणी है । इस क्षेत्र में शिक्षा जागरूकता एवं उत्तम साधनों की कमी है ।

हमारा बुंदेलखंड आयुर्वेद चिकित्सा एवं औषधि उत्पादन में काफी पिछडा है लेकिन पादप विविधता उपजाउ भूमि के कारण हमेशा हरा भरा रहा है ।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन औषधीय पौधों के पारंपरिक ज्ञानए उनकी विविधता और रूढ़िवादी स्थिति का पता लगाने के लिए किया जाता है।

क्षेत्र सर्वेक्षण

क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर बडा मलहरा, बिजावर एवं बकस्वाहा विकासखंड के पुराने अनुभवी वैद्यों तथा चरवाहों के प्रत्यक्ष अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक जानकारी के आधार पर एकत्र कर वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन किया गया ।

सृष्टि की रचना के बाद प्रथम उत्पादन पौधे, सूक्ष्मजीवों एवं जंतुओं आदि की उत्पत्ति हुई है जिसमें मनुष्य संसार का सबसे बौद्धिक सोच विकसित करने वाला प्राणी माना गया है , जिसे आदि–मानव कहा गया जो आधुनिक समय में बिल्कुल अलग, असभ्य, अशिक्षित, अंधविश्वासी, मगर छल कपट से दूर रहा है ।

मानव सभ्यता का विकास आदिम जातियों से जो कुटुम्ब कबीलों एवं जंगलों में रहकर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं और स्वास्थ्य तथा पशुओं की चिकित्सा के लिये औषधि पौधों पर निर्भर रहा है जिनके अथक प्रयासों से आयुर्वेद चिकित्सा का विकास हुआ ।

बडा मलहरा, बकस्वाहा तथा बिजावर क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में रहने वाले औषधि जानकार श्री भिम्मा अहिरवार ग्राम ऐरोरा , वैघ श्री राम जी विश्वकर्मा आदि बडा मलहरा क्षेत्र के खिलैइया चढार जसगुवॉ कलां हरिराम अहिरवार, मिटठू चढार जसगुवां कलां एवं सिंघई वैध बडा मलहरा ।

श्री सिरला अहिरवार जसगुवॉ कला आदि बकस्वाहा क्षेत्र के अनुभवी औषधि जानकार के संपर्क में रहकर जडी बूटियों का स्वयं प्रयोग करके औषधि पौधों के महत्व को जाना जिनके माध्यम से यह शोध पत्र तैयार किया गया ।

प्रत्यक्ष रूप से औषधि जानकारी एवं वैद्यों एवं ग्रामीण चरवाहों से पूछे गए प्रश्नों की तालिका भाग– 1 में नीचे दी गई है ।

क्रमांक	व्यक्ति का नाम	स्थान	उम्र	व्यवसाय	रोग	उपयोगी पौधा एवं भाग
1	भिम्मा अहिरवार	ऐरौरा	56	समाजसेवा	नपुंसकता	शतावर की जड शक्तिवर्धक– यदि महिला के दूध न निकले तो इसका पेस्ट बनाकर दूध में लेने से दूध की मात्रा बढ जाती है ।
2	सिटला अहिरवार	जसगुवांकलां	75	कृषक	पेटदर्द	आंक की जड को कुचलकर गुड के साथ सेवन करने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है ।
3	राम जी विश्वकर्मा	खैराकलां	50	ग्रामीण वैद्य	स्मरण शक्ति बढाने	ब्रहमी की पत्ती को पीसकर काली गाय के घी में सेवन करने से स्मरण शक्ति बढती है ।
4	खिलैइया चढार	जसगुंवा	70	चरवाहा	फोडा फुन्सी	सेमल की छाल को कुचलकर लेप लगाने से घाव ठीक हो जाता है ।
5	पूरन अग्निहोत्री	जसगुंवा	56	कृषक	खांसी	हर्र के फल को भूनकर सोते समय फल को मुंह में दबाकर रस चूसना चाहिये ।
6	नरेंद्र सिंघई	बडा मलहरा	65	आयुर्वेदाचार्य	बाल झडना	काला घमरा एवं घृतकुमारी का लेप
7	कन्जी	जसगुंवा	38	कृषक	धात रोग पेचिश	जड को काटकर पेस्ट बनाकर दूध में सेवन करने से लाभकारी बेल शर्बत पीने से पेचिश में लाभकारी

8	परसादीलाल	बडा मलहरा	50	शासकीय सेवक	दर्द	आंक के पत्ते से सिकाई करने से घुटने के दर्द को आराम मिलता है ।
9	हरिराम अहिरवार	बकस्वाहा	50	शासकीय सेवक	पथरी	पपीते की जड को कुचलकर सेवन करने से पथरी में आराम मिलता है।

भाग–2

क्रमांक	पौधे का स्थानीय नाम	वनस्पति नाम	कुल	स्वभाव	उपयोगी भाग	
1	जमरासी	Elaeodendrun Glaucum एलियोडेन्ड्रान	सीलेट्रेसी Celestraceae	शाकीय	पत्ती	यह कषैली पत्ते तीव्र छीक लाने एव नजला बहा देने वाले हैं, पत्तों को कुचलकर सूंघने से सिर पीडा दूर हो जाती है । स्त्रियो के वातशुल्म एवं हिस्टीरिया जन्य मूर्च्छा को दूर करने के लिये पत्तों की धूनी या धूप दी जाती है ।
2	जामुन	यूजिनिया जम्बोलता Syzigium cumini	मिर्टेसी Myrtaceae	सदाबहार वृक्ष	पत्ती, छाल, फल, बीज आदि	जामुन का उपयोग कई रोगों के उपचार के लिये किया जाता है– मधुमेह में जामुन की गुठली का पेस्ट बनाकर सेवन करने से शुगर नियंत्रित हो जाती है । लीवर, पथरी, गठिया, रोग विकारों का नाशक है ।
3	तेंदू (काला)	डायोस्पाइरस एम्ब्रियोप्टेरिस Diospyros melanoxylen	एबिनासी Ebenaceae	वृक्ष/पेड	फल,पत्ती, छाल	फल–वात प्रमेह एवं रक्त विकार नाशक होता है । छाल–छाल का क्वाथ या फांट अतिसार, कुष्ठ, दर्द में दिया जाता है । छाल का काढा बनाकर शहद में मिलाकर विषम ज्वर में पिलाते हैं।
4	नीम	एजाडिर्टिका इंडिका Azadirachta indica	मैलियेसी Meliaceae	वृक्ष	सभी भाग उपयोगी	नीम के पेड का औषधि क्षेत्र में संपूर्ण भाग उपयोगी है जैसे–स्तंभ, पत्तियॉ, पुष्प, फल, छाल आदि । पौधे की पत्तियॉ पाचक कार्मीनेटिव एवं कीटनाशक होती है । पत्तियों का रस पीलिया एवं अनेक त्वचा बीमारियों में उपयोगी है। फल को कुचलकर सिर में लगाने से जू व डेन्ड्रॉन नष्ट हो जाती है । नीम ऐंटिसेप्टिक होती है जिसमें एजेडारीम पायी जाती है । यह चर्मरोग, मलेरिया तथा

						कीटनाशक होती है जिससे अनाज घुनता नहीं है।
5	बेल	ऐंगल मार्मेटस Eagle marmelos	रूटेसी Rutaceae	वृक्ष	फल–पत्ती	पत्ती–बेल की पत्ती का सेवन करने से बलगम बाहर निकलता है। यह मधुमेह में भी उपयोगी होती है जिससे मधुमेह नियंत्रित होती है। फल–विटामिन सी का प्रचुर स्त्रोत है जो स्कर्वी रोग के लिये उपयोगी है। बेल का फल पाचन क्रिया को सुधारता है जो पेट संबंधी रोग ठीक करता है जैसे डायरिया, उदर रोग ।
6	कैथ	फेरोनिया एलेफेंटम Ferronia elephantum	रूटेसी Rutaceae	वृक्ष	फल–पत्ती	फल– खटटा होता है इसकी चटनी बहुत स्वादिष्ट होती है । विदेशों में इसका शर्बत बनाया जाता है । पत्ती– कबिट की 2–3 पत्ती का रस निकालकर दूध के साथ सेवन करने से पेचिश रोग ठीक हो जाता है ।
7	बहेडा	टर्मिनेलिया बेलेरिका Terminalia bellirica	कोम्ब्रेसी	वृक्ष	फल, छाल, बीज	फल की छाल का चूर्ण बनाया जाता है । फल की गुठली भूनकर उसका रस चूसने से खांसी ठीक हो जाती है छाल त्रिफला में उपयोग किया जाता है जो पेट संबंधी रोग को ठीक करता है ।
8	उमर/गूलर	फाइकस ग्लोमेरटा Ficus Glomerata	मोरेसी Moraceae	वृक्ष	छाल, फल, लेटिक्स	गूलर की छाल को पीसकर मिश्री या जीरे में सेवन करने से महिलाओं में श्वेत प्रदर की समस्या दूर हो जाती है । फल की सब्जी बनाकर खाने से खूनी बवासीर खत्म हो जाती है । फल का चूर्ण बनाकर खाने डायबिटीज नियंत्रित हो जाती है । गूलर का दूध 2–4 बूंदें बताशे में खाने से दस्त ठीक हो जाता है। योनिरोग, सूजन, मोच, फोडा फुंसी आदि ।
9	अमलतास किरवार	कैशिया फिस्टुला Cassia fistula	फैबेरी Fabaceae	वृक्ष	संपूर्ण भाग	फल, पत्ती, फूल– कफ, पित्त को नष्ट करता है। पत्ते मल को ढीला करते हैं। फली का गुदा कफनाशक, वातनाशक होता है, पाचन क्रिया को

						बढाता है। इसकी पत्ती को पीसकर चर्मरोग, कुष्ठ के लिये लाभकारी होता है ।
10	गोखरू बडी	Pedalium murex	पेडालियेसी Pedaliaceae	शाखीय	पत्र, पुष्प,फल	स्वप्नदोष, शक्ति की न्यूनता, मूत्र में नियंत्रण, यकृत, प्लीहा, बुद्धि पंचांग का हिम बनाकर दे ।
11	शीशम	डल्वर्जियो सिसो Dalbergia sisso	फैबेरी Fabaceae	वृक्ष	अंतःकाष्ट, पत्तियां	शीशम की पत्ती धात रोग के लिये लाभकारी होता है । अंतः काष्ठ का तेल त्वचा के लिये रामबाण होता है । इसका उपयोग पशुओं में पाद विदलन रोग ठीक होता है ।
12	इमली	Termarindus indica टर्मेरिन्डस इंडिका	Caesalpinaceae सीजल पायनेसी	वृक्ष	पत्र, पुष्प, फली, बीज में लिया जाता है ।।	इमली– यह एक पारंपरिक आयुर्वेदिक दवा है। इसका उपयोग पेचिश, कब्ज, कृमि, संक्रमण जैसी पेट से जुडी समस्याओं से बचाव में किया जाता है। इमली का पेड एंटीबैक्टीरियल, एंटीआक्सीडेंट जैसे प्रभाव को प्रदर्शित करता है।
13	धामन	Grewia felie ग्रेविया फेली	Tiliaceal	वृक्ष	पुष्प, फल, बीज	वल्य रूक्ष संधान कारक, व्रण सेवक, रक्त, विकार, कास नाशक
14	घुँघुंची	Abrus precaterius	Fabaceae फैवेसी	शाखायुक्त	पुष्प, फली, मूल	घुँघची का बीज बिच्छू विष उतारने में काम आता है । केश्य, मुखशोध, भ्रम, श्वास, नेत्र रोग, इंद्रलुप्त एवं कुष्ठनाशक है।
15	अमरूद	Psidium Gujava	Myrtaceae	वृक्ष झाडीदार	पत्र, पुष्प, फल	अमरूद भारत में पाये जाने वाला फल है। यह अधिकांश ग्रामीण इलाकों में पाया जाता है । फल का सेवन करने से माताओं में दूध बढने व पुरूषों में शुक्राणु और मस्तिष्क को सबल करने वाले हैं। प्यास को शांत करता है । सर्दी जुकाम में लाभकारी तथा बलगम साफ करने में उपयोगीहोता है। आमशोधक होता है ।

कार्य के अपेक्षित परिणाम

बुंदेलखंड क्षेत्र में औषधि पौधों के अध्ययन की बडी आर्थिक संभावनाएं हैं क्योंकि कई लोगों ने वन कारनामों और वैज्ञानिकों को नई जानकारी दी और आदिवासी समाज के बारे में बताया । स्थानीय रिसोर्स का भी राष्ट्रीय उपयोग भी किया जाता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आवृत्तबीजी वनस्पति विज्ञान– सिंह पाण्डेय, जैन*
2. *Text book of Botany- Economic Botany—570*
3. *Innovation the research Concept Bundelkhand Kshetra में*

4. *आयुर्वेदिक चिकित्सा उपयोगी पौधे*
5. *बारीगढ एवं लवकुश नगर ब्लाक के विशेष संदर्भ में वोल्यूम–2, इश्यू–12 जनवरी 2018*
6. *वनस्पति औषधि विज्ञान– वैध रमेश कुमार*
7. *क्षोत्रिय निरंजन एंड अर्चना– यूनिफाइड बॉटनी रामप्रसाद एंड संस भोपाल*
8. *ऑस ज्ञान्या सीमैप– सी. एस. आई. आर. लखनउ– 226015– 2010*
9. *गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस– गीताप्रेस गोरखपुर उत्तरप्रदेश– 2021*
10. *अग्रवाल एस. बी. यूनिफाइड बाटनी स्नातक*
11. *वनोषधि जडी बूटी चित्रावली 625*
12. *अरजरिया अमिता एंड अरजरिया ओ. पी. इटानो बोटेनिकल आब्जर्वेशन आफ*
13. *सम फोरेस्ट ट्री ऑफ छतरपुर मध्यप्रदेश 221–222 , सेमीनार 13 फरवरी 2013*
14. *प्रियव्रत 632, निघन्तु 293, कालेड, 2–256*
15. प्रियव्रत 478 निघन्तु 540 प्रजापति 256